रामकलेवा ॥

रहस्यग्रन्थ

जिसमें

चारोंभ्राता रघुराजकुमारके प्रति सिद्धि सरहज आदिकोंका अनेकक्रीड़ा कौशल्या व वाक्य चंचलता सुललित छन्दों में वर्णित है।

उसीको

प्रोप्राइटर सेठ टीकारामजीने निज "ज्ञानभास्कर प्रेस बाराबङ्की में छपाकर प्रकाशित किया।

"ज्ञानभास्कर प्रेस" बाराबंकी सन् १९०४ ई०

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

रामकलेवा ।

रहस्यग्रंथ प्रारम्भः ।

छन्द—चौपैया ॥

जयगणपति गिरिजागिरिजापति जयतिसरस्वति
माता ॥ जयगुरुदेवकेशरीनंदन चरणकमलसुखदाता ॥
॥ १ ॥ उनइससैदुइकेसंवतमें जेठदशहराकाहीं ॥
ग्रंथकियो आरंभअनूपम बैठिअयोध्यामाहीं ॥ २ ॥
अहैप्रीतिकीरीतिअटपटी मैंकेहिभांतिबताऊँ ॥
तातिसानुजरामकुँवरकोरहसकलेवागाऊँ ॥ जेहिवि
धिजनकसदनरघुनंदनकीन्हेरुचिरकलेऊ ॥ सुखदी
न्हेसारिनसरहजकोसोसबकहिहौंभेऊ ॥ ३ ॥ व्याह
उछाहसियारघुवरको मैंवरणौंकेहिभांती ॥ क्षणमहँबीत
गईसबरजनीरागेरंगबराती ॥ भोरभयेअपनेकुमार
को जनकवेगिबुलवाये ॥ सुनिकैपितुसँदेशलक्ष्मी
निधिसखनसहिततहँआये ॥ ४ ॥ सादरकियप्रणाम
चरणछुइलखिबोलेमिथिलेशू ॥गमनहुनतातातुरितजन

१८

वासजहँश्रीअवधनरेशू ॥ विनयसुनायरायदशरथ सोंपायरजायसुहेतु आनहुचारिउराजकुमारनकरनकले ऊहेतु ॥ ५ ॥ यहसुनिशीशनायलक्ष्मीनिधि भरिउर मोदउमंगा ॥ सखनसमेतमंदहँसिगमनेचढ़िचढ़िचपल तुरंगा ॥ कलनिदेखावतहयथिरकावतकरतअनेकतमा- से ॥ मृदुमुसकातबतातपरस्पर पहुँचिगयेजन वासे ॥ ६ ॥ जहांभानुकुलभानुअवधपतिदशरथराज विराजें ॥ बैठेसभासकलरघुवंशीतेजस्वीसुखसाजें ॥ चोपितचोपदारजहँबोलतबंदीविरदउचारें ॥ सुखदायक गायकगुणगावतनोबतिबजतिदुवारें ॥ ७ ॥ सखनस- हिततहँउतरितुरगतेमिथिलापतिकेवारे ॥ चारिहुसुतयु तअवधराजकोसादरजायजुहारे ॥ अतिसुखनिधिलक्ष्मी निधिकीलखिमखनसहितमतकारे॥रघुकुलदीपमहीपहा थगहिनिजपर्मीपबेठारे ॥ ८ ॥ तेहिछिनसानुजानिरखि राम छबिसखनसहितसुखसाने ॥ लक्ष्मीनिधिमुखदरश पायकेरामहुनैनजुड़ाने ॥ तबश्रीनिधिकरजोरि भूपसों कोमलबैनउचारे ॥ करनकलेऊहेतुपठावो चारिहुराजदु लारे ॥ ९ ॥ सुनिमृदुबचनप्रेमरससानेदसरथमृदुमुसु काने ॥ चारिहुकुँवरबुलायवेगहीं बिदाकियेसुखसाने ॥ जनकनगरकीनारीतपारीवकमबसुखपागे ॥ निजनि- जभुहिमँवारनलागे लेभूषणबरबागे ॥ १० ॥ रघुनंद-

नशिरपाग जरकसी लसीत्रिभंगीबांधी ।। तिमिनोरंगी
झुकीकलंगी रुचिरुचिपैंजनिसाधी ॥ कनककलित
अतिललितमाणिनकी मंजुलमोरविराजी ॥ सिंधुमणिन
केसजे सेहराजोहिहोतमनराजी ॥ ११ ॥ ताकेकोर-
कोरचहुँवोरनिलगीरतनकीपांती ॥ जगमगज्योति
होतिचहुँदिशितेलखिअँखियानझपाती ॥ कुंडललोलैं
हलैंकपोलैंलगीअमोलैंमोती ॥ जवदारजगमगहिजरा-
ऊयुगकजँजीरनजोती ॥ १२ ॥ जालिमजोरजोहरी
जुलफैंयुवतिनजोवनहारी ॥ छूटींअलकैंदुहुँदिशिडलकैं
मनहुँमयनतरवारी ॥ रतनारीकारीकजरारीअतिअनि
यारीआँखैं ॥ रसवारीवरवशकारीप्यारीप्राणनिराखैं १३॥
अतिअवरंगीरतिरसरंगीचढ़ीत्रिभंगीभौंहैं ॥ मनहुँमदन
केयुगधनुसोंहैंजेइजोहेसोइमोंहैं ॥ तिलकरसालविशाल
भालपर किमिवरणौंछविताकी ॥ जनुनौघनपररीढ़ि
दामिनीनेमलियोथिरताकी ॥ १४ ॥ अरुणअधरविच
दामिनिद्युतिदरदमकेदशननिपांती ॥ सन्मुखमुखकरि
जेहिदिशिबोलैंअजबछटाछहराती ॥ जगमगातअति
श्यामगातपरजरतजरिनकोजामा ॥ ताकेकोरकोरचहुँ
ओरनिगुँथेरतनमाणिश्रामा ॥ १५ ॥ पीतसुफेंटासुछवि
सुमेटाकमरलपेटाराजे ॥ नवलपट्टकोकरनलट्टकोकंध
पट्टकोभ्राजे ॥ छोरनलगीकिरोरनमोतीकोरनल-

गीकिनारी ॥ अतिशैदलबैंलगैनपलकैंलखिळल केसुरनारी ॥१६॥ सिंधुरमणिके परेचोलड़े मणिनमाल बहुसोहे॥ कठुलाकंठबिजायटवाहनदेखतही मनमोहे॥ बड़ेचढ़ेनगजड़ेमढ़ेअतिकनककड़ेकरमाहीं॥ छबिउमड़े उरमड़ेतियनकेगड़े मदनमनमाहीं ॥ १७ ॥ मणिमय कंकन सुखप्रदरंकन बंकनकरबिचबांधे॥ जनुपुरयुवति नमनजीतनकोयंत्रवशीकरसाधे॥ मणिमय ढालेबिरचि तजाले कसीकमरकरवाले॥ कंचनसुप्रवालेबँधीबिशाले सजी सबुजउरमाले॥ १८ ॥ सरहीपीतजरकसीपनहीं सनहींमनेसुहाती॥ नूपुरयुतपददियोमहावर देखतदेह भुलाती॥ बदनसकलसुखसदनरामको कोटिमदनमद मारे॥ दरशातउरबसन्तरससबके जनुतनुधरेशृंगारे १९॥ बीरिनखातबतात सखनसों जबप्रभुजेहिदिशबोलैं॥ तनमन भूलिजातसबताकोलेतप्राणमनमोलैं॥ २०॥

दोहा ॥

बरणि सकैको रामको अनुपम दूलहवेष।
जेहिलखिशिव सनकादिकोरहतनतनुहिसरेष २१॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचितेरामकलेवारहस्यग्रंथे प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

छंद—चौपैया ॥ इमिसजिअनुज सहितरघुनंदन चारौराजदुलारे॥ बढ़ेउमँगनचढ़ेतुरंगन अंगनवसन

सम्हारे ॥ १ ॥ जे रघुबंशी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्राण पियारे ॥ चढ़े तुरंग संग ते उगमने राम रंग मतवारे ॥ २ ॥ बोलै चोपदार लै नाम निवरजां गेरे अलापे ॥ चंचल चमर च लै दुहूं दिशते छत्र शखाशिर ढाँपे ॥ ३ ॥ राम बाम दिशि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित ते उसोहैं ॥ चंचल बागें किये तुरन की बातें करत हसों हैं ॥ ४ ॥ जगबंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनंदन को बाजी ॥ ताको गुण छबि कहँ लौं बरणों जो हि होत मन राजी ॥ ५ ॥ भूषित भूषण अंग अदूषन पूषण हय लखि लाजे ॥ चोटिन तनियां गुँथी सुमनियां पगु पैंजनियां बाजे ॥ ६ ॥ जड़ित जवाहिर जीन जरीकी जरबीली अति सोहै ॥ पूंजि पटा की छेटा कहै को काम लटा मन मोहै ॥ जेरबंद मन फंद सबन्ह को तंग सुरंग सुभावे ॥ जरकस पेटी लसी लपेटी झुकि छालरि छबि छावे ॥ ८ ॥ कलित लगाम दाम बहु केरी अंकित नाम बिराजे ॥ सुछबि उमंगी झुकी त्रिभंगी मणिन कलंगी छाजे ॥ ९ ॥ जित रुख पावै तित पहुँचावै छन आवै छन जावै ॥ जिमि जिमि थमि थमि थिरकि भूमि पर गतिन ततिन दर्शावै ॥ १० ॥ चलत चला कै इत उत तारे विविधि कला के भावे ॥ जनु नभ नाकै करत उजाकै राम रजाय न पावे ॥ ११ ॥ खीनी कटि पीनी खुर थाले बँधीन बीनी नाले ॥ लेत उताले सिंध उछले करत समुद इक फाले ॥ १२ ॥ जब उड़ि टापे धरत

धरापैरविवाजिमउरकाँपे ॥ जलपैथकपैअनिलअनलपै जातनकबहुँडरापै ॥ १३ ॥ धावतपवन नपावत पीछू गरुड़हुगर्वगमावै॥ रघुनन्दनको बाजिलाड़िलोअनुपमकलादेखावै ॥ १४ ॥ नामसमुदसुद देतजननको जापरभरतविराजै ॥ श्रीरघुनंदनकेदहिने दिशिचलत चपलगतिसाजै ॥ १५ ॥ रोकतवागें अतिरिसरागेंकर त्रितफुरकनलागे ॥ डमकिडमकी लैगतिबांकी देडांकी सुखपागे ॥ १६ ॥ कहुँनभजावैसुरनछकावै कहुँमहि मोदमचावै ॥ अवनीतेअरुआसमानलौं जनुसोपान बनावै ॥ १७ ॥ फांदतचञ्चलचारों चौकड़ीचपलहुके चखझांपै ॥ भरतकुँवरकोतुरँगरँगीलोवरणिजाय कहु कापै ॥ १८ ॥ चम्पानामचालचटकीलीजेहिपररिपुहन भाये ॥ सबसमाजके आगेनिरतै मोरकुरंगलजाये१९॥ जोकहुँनेकहुहाथउठावत कईहाथउठिजातो ॥ बारबार चुचुकारिदुलारतताहूपैनजुड़ातो ॥ २० ॥ जबगहिबालैडमकतहालै गनिगनिधरतसुफालै ॥ तकितेहिचालै सुरमुनिजालैचितवतचकितनिहालै ॥ २१ ॥ गजनम ध्यघुसिपरत डरतनहिं जरतबरत पगुधारै ॥ रिपुसूदनको बाजिबाँकुरा कोटिन कला पसारै ॥ २२ ॥ लक्खी घोड़ा लषणलालकौ बांको निपट चलाँको ॥ उड़ि उड़ि जातवायुमंडलकोपरतनपगमहिताको २३॥

छनकक्षितीछनआसमानपरछनछविकीछविछावै ॥ छन
महँछनछननाचिगईगतिसिगरेजननछकावै ॥ २४ ॥
तरफरायउड़िजायपरतहैलक्ष्मीनिधियंपाहीं ॥ उचित
विचारि हँसैंरघुवंशीरामहुमृदुमुसकाहीं ॥ २५ ॥ मेघ
घटापै मारिसुटापै विचरैविबुधअटापै ॥ केमजटापै
वाजिमढ़ापैजनुरविमंडलनापै ॥ २६ ॥ तोपतुपकजूटै
जहँछूटैतहँजायसाटूटै ॥ रणरमघूटैवैरिनकूटैवीरनमेंयश
लूटै ॥२७॥ हूंतकरतपुरहूतडरतहिय महाबूतवलजाके॥
जकिसिरहेजनकपुरवासीजोहिजोरजवताके ॥ २८ ॥
चिकनचोटीसुभगसकोटीमोटीकटिछविपावे ॥ रेसम
तारनजालसँवारनवायुऊपरधावै ॥ २९ ॥ फुलडरियां
सोंडरतधरतडगकरतअनेकतमासो ॥ दुरकनिमुरकनि
थिरकनितरकनिवरणिजायकहुकासो ॥ ३० ॥ ताकि
तुरँगकीचंचलताई लषणकीदेखिचढ़ाई ॥ निमिवंशी
रघुवंशीसगरेडगिसे रहेचिकाई ॥ ३१ ॥ रामआदिजे
कुवँरलाड़िलेतेउलखिभरेउछाहैं ॥ रीझिरीझितहँलपण-
लालकोवारिहवारसराहैं ॥ ३२ ॥ इमिमगहं तविलास
विविधविधिविपुलवाजनेवाजैं ॥ सुनतनकीवपुकार
नगरतिय कढ़िवैठींदरवाजैं ॥ ३३ ॥ कोउतियनिराखि
बदनकीसुखमाअतिसुखमँसोंपागीं ॥ भरीसनेहदेहसुधि
नाहीरामरूपअनुरागीं ॥ ३४ ॥ कोउतियदेखिअतुला

तूला अतिसनेहतनुभूला ॥ फूलानैनमैनमनभूलाला-
गिप्रीतिकोझूला ॥ २५ ॥ कोउतियपतिसँगपरीपलँग
मेंझाँकिझरोखेलागी ॥ रामरूपरँगिगईलाड़िलीउठि
भागीपतित्यागी ॥ २६ ॥ कोउघूँघटपटखोलिसुंदरी
मणिमुँदरीलैपानी ॥ देखनदूलहरूपरामको आनँद
सिंधुसमानी ॥ २७ ॥

दोहा ॥

कोउसूरतिलखि साँवरी, तोरतितृण सुख पागि ॥
माधुरिमूरतिमेंपगीं, निजमूरतिसुखत्यागि ॥ २८ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारहस्यग्रंथे
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

छंद—चौपैया ॥ कोउरघुनन्दनछविविलोकिकैबो-
लीसुनसखिवैना ॥ राजकुँवरयेकरनकलेऊजातजनक
के ऐना ॥ १ ॥ इनकोश्रीनिधिगयेलिवाईआयेचारिहु
बेटा ॥ रँगभीनेरघुबंशीछैलादशरथराजदुलेटा ॥ २ ॥
धनियहभाग्यहमारीप्यारी जिनभरिनैन निहारे ॥
तनुदर्शनदुर्लभदूलहकेरविकुलप्राणपियारे ॥ ३ ॥ भाग
सोहागआजभलपायो श्रीमिथिलेशकिबेटी ॥ सुन्दर
श्याममाधुरीमूरतिजिननिजभुजभरिभेटी ॥ ४ ॥ बोली
अपरसखीसुनुसजनीभलीबातबनिआई ॥ हमहुँचलैंसब
जनकमहलकोहँसियेइनहेंहँसाई ॥ ५ ॥ इमिमृदुबातैंकरत

परस्परभईप्रेमवशबामा ॥सुनतजातमुखुंकातअनुजयुत
कृपासिंधुश्रीरामा ॥ ६॥तुरँगनचावतमगछबिछावतआ
जतविपुलनगारे ॥ चोपदारजांगरेअलापतजनकनगर
पगुधारे ॥ ७ ॥ द्वारसमीपदेखिअतिसुन्दरमणिमयचौक
सँवारे ॥ राजकुँवररघुवंशिनकेतहँठाढ़भयेमतवारे ॥ ८ ॥
उतरजायलहिसियामातुकीनगरसुवासिननारी ॥ कञ्च
नकलशसजेशिरऊपरपल्लवदीपसँवारी ॥ ९ ॥ गावत
मंगलगीतमनोहरकरलेकंचनथारी ॥ परछनचलींहेतु
रघुवरकोबहुआरतीसँवारी ॥ १० ॥ जायसमीपनिहारि
रामछविदृगआनँदजलबाढ़ी ॥ छकितरहींवरबदनबिलो
कितचकिततहीतहँठाढ़ी ॥ ११ ॥ रामरूपरँगिगईरँगी-
लीलखिदुलहसुखसारा ॥ तनमनुरह्योसरेखनकोहूको
करैमंगलचारा ॥ १२ ॥ प्रेमपयोधिमगनसबप्यारी
धरिधुनिधीरजभारी ॥ परिछनअली भलीबिधि कीन्हों
रोंकिविलोचनवारी ॥ १३ ॥ लक्ष्मीनिधितबउतरितुरँग
तेचारिउकुँवरउतारे ॥ पाणिपकरिरघुनन्दनजीकोभीतर
महलसिधारे ॥१४॥द्वीपद्वीपकेजहँमहीपसबजनकसमी-
पविराजैं ॥ बैठेसभासकलनिमिवंशीसुरअंशीइमिछाजैं॥
१५ ॥ चोपदारजांगरेअलापैं बहुविधिनौबतबाजैं॥ फहरैं
विपुलनिशानजरीकेमंदगयन्दगराजैं ॥ १६ ॥ रघुनंद
नतहँअनुजलषणयुतसादरजायजोहारे॥देखतउठेसकल

निमिवंशीजनकनिकटबैठारे ॥ १७ ॥ गरगजराकजरा
दृगमेंसेहरारघुनमोरविराजी ॥ दूलहवेषविलोकिरामको
भईसभासबराजी ॥ १८ ॥ तहँकरिकछुदरबार
जनककोदशरथराजदुलारे ॥ लैकैलायरजायनायशिर
सासुसमीपसिधारे ॥ १९ ॥ जहँपिकबैनी सबसुखऐनी
बैसुसुनैनारानी ॥ इंद्राणीकीकौनचलावै लखिरतिरूप
लुभानी ॥ २० ॥ चंद्रमुखीचहुँओरबिराजैंकोउकरचमर
चलावैं ॥ कोउमाखिदेखिरामकीशोभाआरतिमंगलगा-
वैं ॥ २१ ॥ बिछेगलीचेगद्दीतेहिकेऊपरआसनभ्राजै ॥
जनकराजकीरानिसुनैना कोटिचन्द्रछविछाजै ॥ २२ ॥
तेहिछिनतहांगयेरघुनंदनमनफंदनवरवेषा॥देखतउठीस-
कलरनिवासैंरह्योनतनुहिमरेषा ॥ २३ ॥ करिआरतीवारि
मणि भूषणसादरपाँयपखारे ॥ चारिरंगकेचारिसिंहासन
चारिहुवरबैठारे ॥ २४ ॥ लखिछबिऐनासासुसुनैनाएक
नपलकतनैना ॥ भूलीचैनाबोलिसकैना कहतबनैना
बैना ॥ २५ ॥ तकिजकिरही तनकनहिंडोलैमगनमहा
मुदमाहीं ॥ रामरूपरँगिगईरँगीलीआँशुबहेदृगजाहीं ॥
२६ ॥इमितहाँदशाविलोकिसासुकीरामयुक्तमनमाहीं॥
काहभयोयहआजुरानिकोपूंछतभसकुचाहीं ॥ २७ ॥
चतुरसखीचितचरचिरामसों बोलीमधुरीबानी ॥ यह
तुम्हारगुणहैमबलालनऔरनकछुउरआनी ॥ २८ ॥

सुनतबचनयहतुरतधीरधरिजगीसुनैनारानी ॥ बारबार
बहुलीनबलैयाचूमिकपोलनपानी ॥ २९ ॥ मधुरीमूरति
साँवलीसूरतिकीतृणतोरतिरानी ॥ रीझिरीझितहँरामरू-
पपैबिनहींमोलबिकानी ॥ ३० ॥ पुनिकरजोरिरामसों
रानीबोलीअतिमृदुमोई ॥ उठहुलालअबकरहुकलेऊजो
जोरुचिहियहोई ॥ ३१ ॥ यहसुनिसखनसमेतउठेतहँ
चारिहुराजदुलारे ॥ भरीभाग्यअनुरागसुनैनानिजकर
पाँयपखारे ॥ ३२ ॥ रचनाअधिकपदककेपीठनबैठेसब
भाई ॥ कंचनथारीमृदुलसोहारीपरसीबिबिधमिठाई ३३॥
रुचिअनुरूपभूपसुतजेंवतपवनडुलावैंमासू ॥ बूझिबूझि
रुचिव्यञ्जनपरसैंबरणिनजायहुलासू ॥ ३४ ॥ स्वाद
सराहिपायपुनिअँचयेसखियनपञ्जखवाये ॥ बैठेपहिर
पोशाकसखनयुतविविधसुगन्धलगाये ॥ ३५ ॥

दोहा ॥

राजऐन सबचैनयुत, राजैंराज कुमार ।
जिनको हासबिलासलखि, लाजहिलाखनमार ३६॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारहस्यग्रन्थे
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

छंद—चौपैया ॥ तेहिऔसरसुधिपायसखीमुखलक्ष्मी
निधिकीनारी ॥ नामसिद्धिपरसिद्धजासुगुणरूपशील
उजियारी ॥ १ ॥ भागसोहागभरीसुठिसुन्दरीनवयौवन

नमतवारी ॥ रसिकनरीतिप्रितिपरवीनी रतिहिलजा
वनहारी ॥ २ ॥ अतिगुणखानिनिधानरूपकीसबविधि
सुभगसयानी ॥ लक्ष्मीनिधिकीप्राणपियारीनिमिकुल
कीमहरानी ॥ ३ ॥ अलबेलीसरहजरघुबरकीबड़ीसनेह
शृंगारी प्रीतमप्रीतिनिबाहनहारीरामरूपरिझवारी ४ ॥
चंचलचखनचहूंदिशिचितवतिदेखनकोअतुराई ॥ भरी
उमंनसंगसखियनलैतुरतरामढिगआई॥ ५ ॥ बदनचंद
अरविंदलियेकरबिहँसतमंदिरसोहै ॥ रामकुँवरकरपकड़ि
लाड़िलीबोलीतकितिरछोंहै ॥ ६ ॥ ऐचितचोरकिशोर
भूपकेबड़ेचोरतुमप्यारे ॥ सुरतिहमारिभुलायसाँवरेसासु
समीपासिधारे ७ ॥उलटीबातकहोजनिप्यारीआपनदोष
दुराई ॥ तुमहींरहिउछिपायछबीलीसुनतहमारअबाई८॥
हमआयेतुवमहलनभीतरतुमहिंनपरवोजनाई ॥ भलो
सदनतुमरोहैप्यारीजहँसबजाहिंसमाई ॥ ९ ॥ सुनत
रामकेबचनलाड़िलीबोलीमृदुमुसकाई॥तुमरेघरकीरीति
लालजू इहांनचलीचलाई ॥ १० ॥ सासु सुनैनाके
समीपमहँ देतजवाबबनैना ॥ पाणि पकरि रघुनन्दन
जीको गइलेवाय निज ऐना ॥ ११ ॥ चारिसिं
हासनदेतहँआसनभरीहुलासनप्यारी ॥ बारहिंबारनि-
हारिबदनछबिबहुआरतीउतारी ॥ १२ ॥ मेलिसुकंठ
मालतीमालावसननिअतरलगाया ॥ अंचलसेंामुखपें

छिरामकोनिजकरपानखवायो ॥ १३ ॥ जहँचन्द्रिका समानचाँदनीत्रहुँकितबिछीबिशालैं ॥ चमकैंबहुचित्रा- ससदनकेदमकैंमणिनदेवालैं ॥ १४ ॥ जहँरतिरंभासरि- ससुंदरीबैठिकियेश्रृंगारैं ॥ कोउकुसुमनकोकरणफूलर चिकोउकलँगीकोउहारै ॥ १५ ॥ ललितलवंगकपूर सुगंधनिकोउसखिपानलगावैं । कोउकरपीकदानलिये ठाढीकोउसखिचमरढुलावैं ॥ १६ ॥ कोउजलशीतलभरे सुराहीकोउदर्पणदरशावैं ॥ निजनिजसाजसजेसब प्यारीरघुबरसनमुखभावैं ॥ १७ ॥ कोउजलतारगितार तमूराकोउकरतालबजावैं ॥ कोउसितारलैतारतारप्रति गूढ़गतिनदरशावैं ॥ १८ ॥ कोउउपंगमोरचंगमिलावैं देमृदंगमुखथापैं ॥ कोउलैबीणनवीनुसुरनतेमनहुँबशी करजापैं ॥ १९ ॥ कोउमृगनैनीकोकिलबैनीपंचमराग अलापैं ॥ परतकानमैंमधुरतानजेहिबिरहिनकेजिय कांपैं ॥२०॥ नयकीतानमानदैकोईतानबितानबिछावैं॥ सुनतैश्रवैंद्रवैंतरुपाहनमुनिहुँकेमदनजगावैं ॥ २१ ॥ इमिअभिरामधामशोभालखिराजकुँवरअनुरागे ॥ बातैं करतसिद्धिसरहजसोंपरमप्रेमरसपागे ॥ २२ ॥ जेनि मिराजनेवतसुनिआईकोटिनराजकुमारी ॥ राममिलन कीबड़ीलालसाकहिनसकैंसकुचारी ॥ २३ ॥ अति निरदूषणभूषणभूषितकंचनकेसीबेली ॥ रूपशीलगुण

धामरँगीलीराजकुँवरिअलबेली ॥ २४ ॥ जानहिंप्रीति
रीतिकीबातैंकेलीकुशलनवेली ॥ जिनजोहतमुनिजन
मनमोहतमनहुँमदनकीचेली ॥ २५ ॥ तिनयह
सुन्योकिसिद्धिसदनमेंआयेचारिहुभाई ॥ तुरतहिं
एहुँचींसबहीप्यारी जानिससेसुखदाई ॥ २६ ॥
देखी राजकुँरि सब अई रामदरस की प्यासी ॥
अति सन्मान कियो सबहीको सिद्धि सदन सुख-
राशी ॥ २७ ॥ रामसुछबिदेखनतेलागींदृगआनँदज
लबाढ़े ॥ चषझषपरेरूपसागरमें चढ़हिनहीअबका-
ढ़े ॥ २८ ॥ मणिनमौरपरमोतिनकलँगीअलबेलीअति
सोहै ॥ राजतियनकीकौनचलैहैमुनियनकोमनमोहै२९
पीतपोसाककरनकुलकंकनबंकनचितवनिजोहै ॥ योगी
यतीसतीतपधारीसबहीकोजियमोहै ॥ ३० ॥ अनियारे
करिकजरारेकेबांकेनैननरिझोहै ॥ रहतनताकेनिपटकजाके
मारुकरततिरछोहै ॥ ३१ ॥ चिकनचिलकदारचुनिवारी
अलकैंमुखपरछूटीं ॥ जोहतजहरचढ़तयुवतिनकोजड़ीन
लागतबूटी ॥ ३२ ॥ बीरिनिकीलालीअधरनपरसुरजप्र
भापसारैं ॥ मानहुनिकसिमदनम्याननतेसानधरीत
रवारैं ॥ ३३ ॥ झीनिसुजामाअतिअभिरामांश्यामगातछ
बिछाये ॥ रीझिदामिनीजनुघनऊपरअपनीछटनिछ
पाये ॥ ३४ ॥ मंदहँसनिजियफँसनिलालकीभौहकसनि

गरवीली ॥ सुधिनरहततनअशनबसनकीसुनतजबानर
मीली ॥ ३५ ॥ दूलहमूरतिकोवालिसूरतिकहँलोंकरोंबखा-
नी ॥ फिरिनदृगनतरआवतकोइजबतेछविदरशानी ३६॥
लखिछविबरकीश्यामसुंदरकीभईमीनसुखमरकी ॥ तरकी
तनीकंचुकीदरकीकरकीचूरीकरकी ॥ ३७ ॥

दोहा ॥

मतलोभाशोभानिरखि, भईचित्रशसुकुमारि ॥
चकितछकिनसबरहगईं, तनमनदशाबिसारि ॥३८॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचितेरामकलेवारहस्यग्रंथे
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

छंद—चौपैया ॥ जोतियमानिअनूपरूपनिजरही
स्वरूपगुमानी ॥ तेहिलखिरामबदनकीसुखमाबिनहीं
मोलबिकानी ॥ १ ॥ जेनिजदृगमृगतेसुन्दरगुणिरहीं
गरबकेभोरे ॥ छेदिगईतेरामकटाक्षेंघायलआंशु न
डोरें ॥ २ ॥ जेअबलाअवलंबवेदलैसदापातिव्रतपालैं ॥
तेबेधींमनामिजकेबाणनवराकुलफिरहिंबिहालैं ॥ ३ ॥
रघुनन्दनअलवेलोंछैलानैनसैनजेहिमारी ॥ तेहिसुधि
रहेनकामधामकीफिरहिमनोंमनवारी ॥ ४ ॥ अतिसुकु
मारीराजकुमारीसिद्धिसहितअनुरागी ॥ तहँप्यारीगारी
रघुबरकोदेनदेवाबनलागी ॥५॥ एकसखीकहँसुनहुलाल
जी यहस्वरूपकहँपायो ॥ काननसुन्योकामअतिसुंदर

कीतुमैकोसोंइंजायो ॥ ६ ॥ बोलीसिद्धिसुनहुरघुनंदन
तुमहमारननदोई ॥ एकबाततुमसोंहमपूछैलालनेराखो
गोई ॥ ७ ॥ होतश्याहमम्बधसबनको अपनीजातिहि
माहीं ॥ निजबहिनीशृंगीऋषिकोतुमकैसेदियोबिबाही
८ ॥ कीउनकोसुनीशलैभाग्योकीवोईसँगलागी ॥ एती
बातबतावहुलालनतुमरघुबंशअदागी ॥ ९ लषणकह्यो
यहसुनहुलाड़िलीजेहिविधिजहँलिखिदीना ॥ तहँसँ-
योगहोतहैताकोव्याहतोकर्मअधीना ॥ १० ॥ कहँहम
राजकुँवररघुबंशीकहँबिदेहबैरागी ॥ भयोहमारव्याहतु-
म्हेरघरविधिगतिगनैकोभागी ॥ ११ ॥ औरोएकहास
उरआवैअवरजहैमनकाहू ॥ तुमतोहौसिधिवैलक्ष्मीनि
धिनारिनारिभोव्याहू ॥१२॥ एकसखीकहसुनियेलालन-
तुमहिसकहिकोजीती ॥ जाहिरअहैसकलजगमाहीं
तुम्हरेघरकीरीती ॥ १३ ॥ अतिउदारकरतुतिदारसब
अवधपुरीकीबामा ॥ खीरखायपैदासुतकरतींपतिकरकछु
नहिंकामा ॥ १४ ॥ सखीवचनसुनतैरघुनंदनबोलैमृदु
मुसकाते ॥ आपनिचालछिपावहुप्यारीकहहुआनकी
बातें ॥ १५ ॥ कोउनहिंजनमैंमातुपिताबिनबंधीवेदकी
नीती ॥ तुम्हरेतौमहितेसबउपजैंअसहमरेनहिंरीती १६॥
बोलीचन्द्रकलातेहिऔसर परमचतुरसुकुमारी ॥ सिद्धि
कुँवरिकीलहुरिभगिनीलक्ष्मीनिधिकीसारी ॥ १७ ॥

लरिकाईंतेरह्योलालजीतुमतपस्वनसँगमांहीं ॥ पेछल छंदफंदककहँपायेसत्यकहोहमपाहीं ॥ १८ ॥ कीमुनिनारि नकेसँगसीखेकीनिज भगिनीपासैं ॥ मीठीसीठोस्वाद लालजीबिनचाखेनहिंभासैं ॥ १९ ॥ बोलेभरतभलीकह सजनीतुमहुँतोअबैकुमारी ॥ वर्णहुपुरुषसंगकीबातैंजो कहँसीखेहुप्यारी ॥ २० ॥ रहेमुनिनसँग ज्ञानसिखनको सोसबसुनेसुनाये ॥ कामिनिकामकलाअबसीखनहम तुम्हरेढिगआये ॥ २१ ॥ सिद्धिकह्योतबसुनहुभरतजी ऐसेतुमनबखानौ ॥ तुम्हरीतोगनतीसाधुनमेंलोकबात काजानौ ॥ २२ ॥ भरतकह्योतुमसाँचिकहतहौहमसाधू परकाजी॥ ऐसीसेवाकरोकामिनीजासोंहौंहमसाजी२३॥ आयेऐन अपूरबयोगीअसानिजमनगुणिलीजै ॥ अधर सुधारसकोदैभोजनअतिथैपूजनकीजै ॥ २४ ॥ एकस- खीकहैसुनहुसबैभिलिइनकीएकबड़ाई ॥ ऋषिमखराखन गयेकुँवरयेतहँहमअससुधिपाई ॥ इनकहँसुंदरदेखकाम बशतियाताड़काआई ॥ सोकरतूतिनभईलालसोंमारेहु तेहिखिसिआई ॥ २५ ॥ बोलेरिपुहन सुनहुभामिनी नाहकदोषनदीजै ॥ जोकरतूतिबनीनहिंउनतेसोहमसे भरिलीजै ॥ २६ ॥ बिनजानेकरतूतिसबनकोतुम्हरेघर भोबयाहू॥सोपछितानिनरहीपियारीअबकोसियेहुसमाहू२७ जोकेहितुमरोषचढ़ावहुसोमतिकरहुउशाई ॥ बोसिनसे-

वामेंतुम्हेंरहमहां,जिरचारिउभूाई ॥ २८॥ सुनिबाणीरिपु दवनलालकीबोलींकोउसुकुमारी ॥ कहँपाईऐतीचतुराई कहियेलालविचारी ॥ २९ ॥ कीकहुँमिलीनारिगुणआ गरकीगणिकनसँगकीन्हो ॥तीनोभाइनतेतुमरेमहँलखि यहुचिह्ननवीनो॥३०॥रिपुहनकहभलकह्योभामिनीभेदि यभिदहिजानैंगणिकानारिनहूतेसौगुण तुमहिंअधिक हममानैं ॥ ३१ ॥ हमरोतुम्हरोचिह्नलाड़िलीएकभांति लखाई॥तातेमखीहमारतुम्हारीचाहीअवाशिसगाई३२॥ सुनिनवउक्तियुक्तिकीबातैं बोलीसिधिसिकुमारी ॥ सुनियेरसिकरायरघुनंदनआँनदकन्दविहारी ॥ ३३ ॥ अतिअभिरामकामहूमोहतमूरतिदेखितुम्हारी ॥ कैसे बचीहोंयँगीतुमतेअवधपुरीकीनारी॥ ३४॥यौंकहिरही चुपायसुंदरीसिद्धिकुँवरिसुखऐना ॥ ताकोहाथपकरि रघुनन्दनबोलेअतिमृदुबैना ॥ ३५ ॥

दोहा ॥

जसमर्यादाजगतकी, बांधिदियोकरतार ।
राजारंकयतीसती, करतसोईव्योहार ॥ ३६ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचितरामकलेवारहस्यग्रंथे
पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

छंद–चौपैया ॥ अनुचितउचितविचारिलोगसबतहँ तसराखरभाव ॥ तुमतोअपनेकमजानातिहौसबहीकं

रसचाव ॥ १ ॥ यहसुनिभरतलषणरिपुसुदनहँसिसकल
देतारी ॥ सिद्धिआदिसबराजकुमारीतेउअतिभईसु
खारी ॥ २ ॥ यहिविधिहँसिहँसायरघुवरसोंदेदिवायमृदु
गारी ॥ नानाभांतिमनोरथमनकेलागींकरनसुखारी ३॥
कोउसखिरामसमीपजायकेकहतिकछूलगिकाने ॥ कुँवर
कपोलपरशिकेप्यारीजनमसफलकरिमाने ॥ ४ ॥ कोई
निजकोमलकरनकरनतेचरणकमलप्रभुचापैं ॥ बारबार
हियलायलाड़िलीदूरिकैंतनुतापैं ॥ ५ ॥ कोइगलमाल
उतारकुँवरकीडारिकंठनिजलेहीं॥ रघुवरमिलनसरिससुख
पावैंवारिअपनपोदेहीं ॥ ६ ॥ कोउचंदनचढाइरघुवरउर
पुनिनिजतनहिलगावैं ॥ स्वेदसुगंधपरशिकेप्यारीतीन
हुँतापमिटावैं ॥ ७ ॥ कोइकरकंजनलैमृदुअंजनखंजन
दृगदैदेही ॥ विलगनमानहिरामरँगीलेआपनजानिस
नेही ॥ ८ ॥ कोइचुनिकलीअलीअतिसुंदरिरचिकलँगी
शिरदीनी ॥ रामकुँवरकरछुवतछवीलीछकितरहींरसभी
नी ॥ ९ ॥ कोउसखिपानखवायरामको पुनिनिजमुख
लियेमेली ॥ प्रीतप्रसादजानिकैसुंदरीमगनभईअल
वेली ॥ १० ॥ निजनिजरुचिअनुरूपरामसोंकियोभाव
नाप्यारी ॥ चितचढगईसाँवलामूरतिभईप्रेममतवरी॥११॥
रसिकशिरोमणिश्रीरघुनन्दननवलनेहअभिलाषी॥ जस
जाकेजियरहीलालसातसतेहिकीरुचिराखी ॥१२॥ अवध

छैलदिलैदारयारसोंलगीअलिनविचप्यारीं ॥ परवशपरीं प्रेमपिंजरमेंउड़िनसकैंसुकुमारी ॥ १३ ॥ रघुनंदनतवकह्यो सिद्धिसोंजोतुमदेहुनिदेशू ॥ तौअबहमगमनैंजनवा सेजहँश्रीअवधनरेशू ॥ १४ ॥ सुनियहवाणीरामकुँवर की कांपिउठींउरआली ॥ सिद्धिआदिसबराजकुमारीं बोलींविरहविहाली ॥ १५ ॥ नेहवढ़ायछकायरूपरस आपुअवधअबजैहैं ॥ हमविरहिनकेप्राणलाड़िलेकहो कौनविधिरैहैं ॥ १६ ॥ नृपकिशोरचितचोरछबीलेतव कसप्रीतिलगाई ॥ हमअवलनअबमारिसाँवरेचाहत अवधासिधाई ॥ १७ ॥ कीतुमलालयहौविधिगाख्योजब ऐहौससुरारी ॥ करिहौंकतलजनकपुरनारिनमारिप्रीति तरवारी ॥ १८ ॥ हमअवलाअबध्यसबभांतिनसोतुमका मिनमानी ॥ मारेहुनैनवाणविषवारेभौंहकमानताहि तानी ॥ १९ ॥ लोकलाजकुलकानिबड़ाईयहछनमहँसब छूटै ॥ सुनियेरसिकरायरघुनदनलागिप्रीतिनाहिंछूटै ॥ २० ॥ नीचऊचकोनिहुजातिनसोंजोसनेहलगिजाई ॥ मिटैनत रसदरशाविनदेखेकोटिनकरैउपाई ॥ २१ ॥ यदपिमीनकी मूरतिनिशिदिनहियमेंबसातिविशेषे ॥ तरसतरहतदोउदृ गपापीमानतनहिंबिनुदेषे ॥ २२ ॥ बोलनिचलनिहँस निप्रीतमकीहियतेहोतिनन्यारी ॥ तऊतासुमिलवेकी लालनरहतिलालसाभारी २३ ॥ याजगमेंबहुपुरुषदेखि

यतसुंदरसुधरसुमाती ॥ बिनुदेखेनिजप्यारयारकेहोतिं
नशीतलछाती ॥ २४ ॥ छनछनबिरहदहेरघुनंदननैन
लगनिजेहिलागी ॥ ज्योंभूनेकीलियेकाँकरीजबछिरकै
तबआगी ॥ २५ ॥ निशिदिनताहीमेंसुखमानतगनतन
नीतिअनीती ॥ प्रीतिकिरीतितेईयहजानैजिनकेहाथ
बितीती ॥ २६ ॥ भरिभरिआवैनैनाविरोगीसूखतजात
शरीरा ॥ प्रीतमानपहिंचानहिप्यारेप्रीतिमानकीपीरा ॥
२७ ॥ बरुसबतेनिरासह्वैरहियेसकलजगतसुखभोगू ॥
परमपुनीतविनीतप्रीतकोदैवनदेइवियोगू ॥ २८ ॥
जोकरतार सुनैममविनतीदेइइहै करिछोहू ॥ अति
दिलदारपियारयारकोकबहुँनहोयबिछोहू ॥ २९ ॥ परब
शपरैजायबरुसरबससबताजि हायविदेही ॥ स्वपन्यो
मेंबिछुरैनबिधाताआपनयारसनेही ॥ ३० ॥ भागेनरक
निकायजनमभरिरहैस्वच्छअरुतापी ॥ पैकबहूँविछुरैन
बिधाताअपनायारमिलापी ॥ ३१ ॥ करमधरमबरुत्यागि
जगतमें!फिरप्रेममतवारो ॥ पैकबहुँबिछुरैनबिधाताआप-
नप्राणपियारो ॥ ३२ ॥ वरुजलभीतरबसैजनमभरितप
करितनुहिझुरावै ॥ पैस्वपनेहुअपनेप्रीतमकीविधिनवि
योगकरावै ३३ ॥ वरुसुखखाकलगायचायभरिखायघरन
केटूका ॥ पैकरतारपियारयारसों कबहुँपरैजानिचूका ३४॥
जातिपांतिबरुगोइखोइकुलसबतजिहोइभिखारी ॥ कबहुँ

नहोइप्रीतकीमूरति ये आँखनतेन्यारी ॥ ३५ ॥

दोहा ॥

जेतेसुखसब जगतमें, सुनियेराज-कुमार ॥
तेसबदुखहोइजातहै, बिछुरतआपनयार ॥ ३६ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचिते रामकलेवारहस्यग्रंथे षष्ठोऽध्यः ॥ ६ ॥

छंद–चौपैया यद्यपिहमअबलारघुनंदननीचजाति सबभांती ॥ पैलगिजाहिप्रीतिउरजासोंताहिकेहाथबिकाती ॥ १ ॥ अतिनिरदेहिरदेस्वारथरतसबदिनचलहिं अनीती ॥ पैहियकपटनराखहिंतासोंबांधहिंजासोंप्रीती २ ॥ हमतियनीचमीचकीमूरनिसदाअसांचहिभाखें ॥ पैलगिप्रीतिकरैंहमजासोंतेहितनमनदैराखें ॥ ३ ॥ पति पितुपुत्रबंधुपरिजनतेरहैंसबनतेन्यारी ॥ पैकछुबीचनराखहिंतासोंबांधहिंजासोंयारी ॥ ४ ॥ हमतेनीचनअबजग रघुबरतुमतेऊंचनकोई ॥ पैहियप्रीतिजुतोलिलीजियेगरू हमारीहोई ॥५॥ सुनिइमिआरतबैनातियनकेतरुनकरुन रससाने ॥कोमलचितकृपालुरघुनंदनप्रीतिरीतिभलजाने ६ ॥ बोलेवचनभक्तभयभंजनसुनहुतियहुसबकोई ॥ अब मैंकहौंस्वभावआपनोतुम्हैंनराखहुगोई ॥ ७ ॥ शिव सनकादिआदिब्रह्मादिकइनतेऔरनभारी ॥ तिनहूंते तुमअधिक पियारी सुनुसिधिराज कुमारी ॥ ८ ॥

जोकोउप्रीतिकरेंमेरेपरहोतजोजानअजानौं ॥ प्राण समानसदातेहिराखौंऔगुणएकनमानौं ॥ ९ ॥ मेरींहै यहबानिलाड़िलीप्रीतिवंशजनजानें ॥ नतुखाजतवागे मोहिंप्राणीकरिजपतपव्रतध्यानें ॥ १० ॥ जिनजिन प्रेमिनकेरिजगतमेंसुनियतबड़ीबड़ाई ॥ तिनतिनमें विचारिजांदेखोसबमेंएकखुटाई ॥ ११ ॥ हिमतनुदहै नकहैकबौंकछुपुनितेहिलखिसुखमाने ॥ ऐसीदरद कमलकेदिलकीकहौभानुकोजाने ॥ १२ ॥ तरसत रहतदरशबिनुपायेनितताकततेहिपाहीं ॥ असचकोर कीप्रीतिचंदकेनेकुचुभीचितनाहीं ॥ १३ ॥ घुमड़ी घटादेखिप्रीतमकीनाचतदादुरमोरा ॥ ताकीवोरत निकनहिंताकेऐसोमेघकठोरा ॥ १४ ॥ पीउपीउकरि जोनपपीहाप्राणत्यागकरिदीन्हों ॥ पीउकेजीउदया नहिंआईवरुहत्याशिरलीन्हों ॥ १५ ॥ सरबसत्यागि परीतेहिकेबशछांड़ितिनहिंदिनराती ॥ ऐसीमीनाकि देखिमिताईजलकीफाटिनछाती ॥ १६ ॥ जातपतंग समीपदीपकेमोहिज्योतिछनमाहीं ॥ तेहितनुदाहतमें कृशानुकेभईदयाकछुनाहीं ॥ १७ ॥ ऐसेबहुतप्रीति वाननकीदेखीचालअधीरा ॥ एकतोप्राणदेतवाकेपर यकराखतनहिंपीरा ॥ १८ ॥ असनहिंप्रीतिहमारी प्यारीसुनहुसिद्धिसुखधामा ॥ अपनेप्रीतिमानप्राणी

कोपन्है भरितजौंनठामा ॥ १९ ॥ छोटमानिमोरेप्रीतम
कोजोकोउगर्वदुखावै ॥ अतिशैबड़ोबनाऊँताकोब्रह्महु
माथनवावै ॥ २० ॥ सिगरेलोकनमाँहलाड़िलीसबमे
तेहिपुजवाऊँ ॥ ब्रह्मादिककीकौनचलावैमैंतेहिमाथ
नवाऊँ ॥ २१ ॥ अपनेऔवाकेशरीरमैंनेकहुभेदन
राखौं ॥ कबहूंछोहनछांड़ौंताकोचूककरैजोलाखौं ॥२२॥
तीनिलोकाराजककाजसबसंपतिसुतवैदेही ॥ येसबप्यार
नलागहिंमोकोजसमोहिंप्यारसनेही ॥ २३ ॥ नाना
रूपधरौंजिनकेहितबनबनविचरतजागौं ॥ केतीविपति
सहौंशिरऊपरपैनिजयारनत्यागौं ॥ २४ ॥ गणिकागि
द्धगयंदअजामिलशवरीऔकपिराऊ ॥ जाम्बवन्तहनु
मंतविभीषण जाकेहिंमोरस्वभाऊ ॥ २५ ॥ ओनिज
मगसमेटिसबथरतें बांधहिंममपदप्रीती ॥ ताकेसाथ
दाससमडोलौं असिहमारिहैरीती ॥ २६ ॥ मोतेप्रीति
लगायकरैजोऔरदेवकीआसा ॥ कोटिनविनयकरैवह
प्राणीमैंनजाहुँतेहिपासा ॥ २७ ॥ प्रेमपरायनअतिचित
चायनभित्रभावहियलेखे ॥ ऐसेप्रीतिवंतप्राणीकोकलन
परहिविनुदेखे ॥ २८ ॥ मनमेंस्वारथसुखपरमारथकपट
प्रेमदरशावै ॥ ऐसीसूढ़़प्रीतकीसूरतिसपनहुँमोहिं न
भावै ॥ २९ ॥ महाप्रलयजबहोतजगतकीचेतनकोउनर
नारीनाशनहींमेरेप्रीतमकोसुनहुसिद्धिसुकुमारी ॥ ३० ॥

जाकोमैंरावनमनचाहोंतेहिकोमारनहारा ॥ जाकोचहों उथापनप्यारीतेहिकोथापनवारा ॥ ३१ ॥ तनकहुजासु चहोंमनतेमैंमंगलमोदभलाई ॥ ताकीतेंतिसकोटिदेवता करहिंसदासेवकाई ॥ ३२ ॥ छनमहँकरौबिरंचिरंकसम. रंकबिरंचिबनाऊँ ॥ शिवसनकादिकआदिदेवतासबकहँ महींनचाऊँ ॥ ३३ ॥ कर्मधर्मबीरताधीरतायोगसिद्धि चतुराई ॥ ज्ञानध्यानविज्ञानसुजनताराजनीतिनिपुणा ई ॥ ३४ ॥ इनतेजीतिसकैनहिंमोंहींकोटिनकरैउपाई ॥ हारिजाऊँप्रेमीप्राणीतेतहांनमोरबसाई ॥ ३५ ॥ तेतुम सबैप्रेमकीमूरतिसूरतिकीबलिहारी ॥ सिद्धिआदिसब राजकुमारीमोहिंप्राणहुतेप्यारी ॥ ३६ ॥ तुम्हरेहिय अभिलाषआजुजोसोसबभांतिपुजैहों ॥ लोककिलाज बचायलाडिलीतुमतेबिलगनहैहों ॥ ३७ ॥ हमसबभांति तुम्हारसांवलीतुमसबभांतिहमारी ॥ सत्यसत्यपेसत्यबचन ममानहुराजकुमारी ॥ ३८ ॥

दोहा ॥

रघुनंदनकेबचनसुनि, खुलिगेकपट किवार ।
बढ्योप्रेमसबतियनके, तनिकहुनहींसम्हार ॥ ३९ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानबिरचितेरामकलेवारहस्यग्रंथे

सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

छन्द—चौपैया ॥ पुनिभरिधीरजअलीभली भेि

जोरिपंकरुहपानी ॥ सिद्धिआदिसवराजकुमारीबोलींअ
तिमृदुबानी ॥ १ ॥ धन्यभागहमरो रघुनन्दनहमतेबड़
कोउनाहीं ॥ बूड़तरहीं जगतसागरमेंराखिलीन्हगहि
बाहीं ॥ २ ॥ हमनारीसबभांतिअनारीकियेप्रीतिसुद
मेई ॥ रामकुमाररावरेकेसमकीनकृपानहिकोई ॥ ३ ॥
प्रतिउपकारहोतनहिंतुमतेजसतुमकीन्हेहुप्यारे ॥ चंद्रस
मानहोइनहिंकबहूंजुरहिंहजारनतारे ॥ ४ ॥ जेहिजेहि
योनिकरमवशहमकोजनमबिधातादेही ॥ तँहतँहरसिक
रायरघुनंदनतुमहीमिलहुसनेही ॥५॥ बरुविधिकोटिन
करैजातनायातनछनछनछूटै॥ हमरीतुम्हरीलगनलाड़ि
लेकीनोजन्मनटूटै ॥ ६ ॥ सुनिबानीकरुणारससानी
रघुबरअंतरजामी ॥ बहुमान्योसबराजकुमारिनकहिक-
हिकोमलबानी ॥ ७ ॥ सबसोंबिदामाँगिरघुनन्दन
अनुजसहितपगधारे ॥ निकसेमानहुसिद्धिमहलते
चारिचन्द्रछबिवारे ॥ ८ ॥ रामहिपानखवावतसाथहि
चलींसिद्धिसुखऐना ॥ अयेराजमहलमोंसिगरेजहँश्री
मातुसुनैना ॥ ९ ॥ चरणप्रणामकीनरघुनन्दनजोरि
सरोरुहपानी ॥ बिदाहेतुपुनिबचनसुनाये कहिअति
कोमलबानी ॥ १० ॥ सुनियेबैनामासुसुनैनाभरेप्रेम
जलनैना ॥ रहोकिजाहुनकछुकहिअ.वभूलिगईसब
चैना ॥ ११ ॥ पुनिधरिधीरअनेकअभूषणजेबड़मोलके

जानी ॥ अनुजसखनयुतरामकुँवरकोदीनसुनैनारानी ॥ १२ ॥ पायपांशाकनायाशिरचरणहि लहिअशीशमुद पाया ॥ तबकरजोंरिसिद्धिभइटाढ़ीसुनौरामसुखधामा ॥ १३ ॥ हमराउरचरणनकीदासीप्रेमपियासीनारी ॥ हमपरछाहनछाड़ौप्यारे आमनबिरदबिचारी ॥ १४ ॥ दृगजलभरिबोले रघुनन्दनहमतुम्हार बँदिप्यारी ॥ असकहिबोधदियेबहुभांतिनतबसिधिमहलसिधारी ॥ ॥ १५ ॥ रघुनन्दनतबअनुजसखनयुतजनकसभा पगुधारे ॥ सादरकियेजुहारचरणछुइपायरजायसि धारे ॥ १६ ॥ लक्ष्मीनिधियुतराजकुँवरसबआदिपौरिजबआये ॥ सेवकसकलतयारीकीन्हेवाहनसबबुलवाये १७ कोउतुरंगपरकोउमतंगपरआपुरुचिरसुखपाला ॥ कोउ सुंदरस्यंदनचढ़िराजैंबाजैंबिपुलबिसाला ॥ १८ ॥ फहरैं सुभगनिसानगजनपरबिपुलनकीबपुकारैं ॥ चहुँदिशते जागरभलौंपैंबंदीबिरदउचारैं ॥ १९ ॥ कोउशिरकियेछत्र कीछायाकोउकरव्यजनपसारैं ॥ कोउरचिपानखवावैंरामैंचमरदोउदिशिढारैं ॥ २० ॥ इमिरचनायुतश्रीरघुनंदन चढ़चलेसुखपाला॥ललकिझरोखन[illegible]नलागींजनकनगरकीबाला ॥ २१ ॥ कोउकहैदामिनबरणबनीजसश्रीमिथिलेशकिशोरी ॥ तैसइश्यामसुभायमलोनेरामकुँवरकीजोरी ॥ २२ ॥ कोउकहैकौनजन्मभोपूजहियहलालमाहमारी ॥ कछु

बातैंकोरिरामकुँवरसोंमिलतींभुजापसारी ॥ २३ ॥ कोउ कहधन्यराजकुलनारिपूर्वपुण्यभलकीन्हो ॥ हँसिहँसा यश्रीरामकुँवरसोंजन्मसफलकरिलीन्हीं ॥ २४ ॥ आज जन्मधनिजगमहँपायोश्रीनिमिराजकुमारी ॥ सुंदरपा यसाँवलीमूरतिउरतेकरीनन्यारी ॥ २५ कोउकहकहां कुँवररघुवंशीकहँहमनारिगँवारी ॥ केहिविधिमिलनो होयबिधातादीन्योजन्मवृथारी ॥ २६ ॥ कोउकहेहोत भागभरिसजनीशोचिमरोकतप्यारी ॥ इतनोरह्योसँयोग हमारोनैनमिलीननिहारी ॥ २७ ॥ इमिआरतसुनिवच ततियनके अतिकरुणारसभीने ॥ तिनकीदिशिकृपालु रघुनदनचितैप्रबोधहिदीने ॥ २८ ॥ इमिमगहोतविलास बहुतविधिआयेसबजनवासा ॥ उतरेअनुजसखनयुत रघुबरतुरतचलेपितुपासा ॥ २९ ॥ अवधराजकोदेखिदूर- तेसानुजकीन्हप्रणामा ॥ भूपतिधायलायउरलीनोकहि नजायसुदप्रामा ॥ ३० ॥ ढिगबैठारिदुलारिसुतनको पूंछतअवधभुआला ॥ केहिविधिरामकलेऊकीन्हींसबक हिजाहुदेवाला ॥ ३१ ॥ रायरजायपायरघुनंदनअतिआ- नँदउरछाये ॥ सबकहिगयेमहलकीबातैंरघुवर सहजसु भाये ॥ ३२ ॥ सुनिबिहँसेमहराजमभायुत वरणिनजा यहुलासू ॥ पुनिनृपदियरजायसुतनकहँगेसबनिजनिज बासू ॥ ३३ ॥ इमिआनंदजनकपुरबासीनितप्रतिपावत

लागू । कोटिनइंद्रनजरनहिंआवननिरखतजेहसुख भोगू॥३४॥रामकलेवारहसचरितयहलघुमतिकाकविकिमि गावैं ॥ शेषगणेशमहेशशारदातेऊपारनपावैं ॥ ३५ ॥ जाकोउप्रीतिरीतिउंरचाहैसोग्रंथहियहवांचै ॥ पूरणपावै प्रेमरामकोपुनिजगनाचननाचै ॥ ३६ ॥ रामकलेवारह सग्रंथयहरसिकजननअधिकारा ॥ जाकेश्रवणपरतरस बातैंहियेनउठतविकारा ॥ ३७ ॥ ज्येष्ठदशहरातेअरंभक- रिकारदशहराकाहीं ॥ रामकलेवारहसग्रंथयहपूरणभो मुदमाहीं ॥ ३८ ॥

दोहा ॥

निजपैंतालिसबरमकी, उमिरिजानिपरमान ।
कियोकलेवाग्रंथयह, रामनाथरघान ॥ ३९ ॥

इति श्रीरामनाथप्रधानविरचितेरामकलेवारहस्यग्रंथेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इतिरामकलेवारहस्यम् ॥